ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-3*AUGUST-2014

भारतीय संस्कृति व धर्म में पर्यावरण संरक्षण

आरती विश्नोई
सहायक प्राध्यापक,
भगाल विभाग
पी.पी.एन. पी.जी. कालेज,
कानपुर

सारांश

पर्यावरण संरक्षण आज की भूमण्डलीय मानवता एवं सरकारों की सबसे अहम् आवश्यकता है, जिस पर सम्पूर्ण सभ्यता की सुरक्षा व विकास अवलम्बित है। बीसवीं सदी के अन्तिम चरण में विश्व की भयावह समस्या का सामना करना पड़ रहा है। पर्यावरण सम्बन्धी आधारभूत अवधारणाओं का प्रथम दिग्दर्शन वेदों में होता हैं। यदि हम अपनी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति और दर्शन का बारीकी से अध्ययन करे तो पायेगें कि हमारे ऋषियों मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण के महत्व को समझ व जान लिया था।

भारतीय संस्कृति की ग्रहणशीलता तथा समन्वय की प्रवृत्ति आज भी समूचे विश्व के लिये एक उदाहरण हैं प्राचीन काल में आर्य वृक्षों और नदियों को पूजते थे। वृक्ष हमारे मित्र, सहोदर और प्राण है वास्तव में वृक्षों का अर्थ है–वर्षा, उर्वरक भूमि, भूमि क्षरण पर रोक, हमारा भोजन हमारा आच्छादन, हमारा सौन्दर्य और हमारा माधुर्य। हमारे धर्म ग्रन्थों में वर्णित यज्ञक्रिया से पर्यावरण स्वच्छ शुद्ध व निर्मल रहता है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों में सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और इन्द्र आदि की पूजा का नियम बताया गया है। मनुस्मृति में वृक्ष काटने वाले को पापी की संज्ञा दी गयी है। उस समय के ऋषि मुनि प्रदषण के खतरे को जानते थे इसलिये उस समय के सभी धार्मिक तथा सामाजिक कर्मकाण्डों में पर्यावरण को दूषित होने से बचाने वाले क्रिया–कलाप भी सम्मिलित रहते थे। अतएवं हमारे ऋषियों ओर मुनियों ने वृक्षों की पूजा अर्चना का विधान बनाकर पर्यावरण संरक्षण का जो मार्ग हमें दिखाया था हमें उसी पथ पर आगे बढ़ना चाहिये।

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति व धर्म, पर्यावरण संरक्षण।

प्रस्तावना

पर्यावरण संरक्षण आज की भूमण्डलीय मानवता एवं सरकारों की सबसे अहम् आवश्यकता है, जिस पर सम्पूर्ण सभ्यता की सुरक्षा व विकास अवलवम्बित है। पर्यावरण प्रदूषण से आज समग्र मानवता के अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। हमारी पृथ्वी प्राचीन काल से ही मनुश्य एवं अन्य जीवधारियों के लिये आवास एवं जीवन का आधार रही है पृथ्वी के वन एवं जल स्रोतों को धरती के प्राणियों ने समय–समय पर संवारा व उपयोग किया। इतिहास साक्षी है कि जब–जब प्राकृतिक संतुलन डगमगाया एक के बाद एक हमारी संस्कृतियाँ तथा वन्य जीवजन्तुओं व वनस्पतियों की प्रजातिया लुप्त होती गई, मेसोपोटामिया, मोहनजोदड़ों एवं हड़प्पा जैसी सभ्यतायें संभवतया इसी असन्तुलन के कारण लुप्त हुई इसमें कोई सन्देह नहीं कि दुनिया का भविष्य हमारी धरती के स्वास्थ्य पर निर्भर करेगा और यह स्वास्थ्य हमारी धरती के पर्यावरण पर।

बीसवीं सदी के अन्तिम चरण में विश्व को भयावह पर्यावरण समस्या का सामना करना पड़ रहा है। पर्यावरण सम्बन्धी आधारभूत अवधारणाओं का प्रथम दिग्दर्शन वेदों में होता है। यदि हम अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और दर्शन का बारीकी से अध्ययन करें तो पायेगे कि हमारे ऋषियों–मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण के महत्व को समझ व जान लिया था। वैदिक काल में वृक्षों को कितना महत्व दिया गया था यहां वैदिक काल को अरण्य संस्कृति के स्वर्णकाल के रूप में निरूपित किया जाता है। उन दिनों वनों की देवी आरण्यानी की आराधना करना प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनिवार्य था। भारतीय आर्य परम्परा में अरण्य, तपोवन और कुंज कई ऋषियों के लिये तपस्थली व कर्मस्थलीय रहे है। स्कन्दपुराण और कठोपनिषद के अनुसार पीपल के पेड़ की जड़ में ब्रह्मा तने में विष्णु व टहनियों में शिव का वास माना गया है। हमारें ऋषियों और मुनियों ने वृक्षों की पूजा अर्चना का विधान

बनाकर पर्यावरण संरक्षण का जो मार्ग हमें दिखाया है। हमें उसी पथ पर आगे बढ़ना चाहिये।

पर्यावरण से आशय उस वातावरण से है जिसमें सारे जगत आवरित रहता है पर्यावरण की अंग्रेजी Environment शब्द को उत्पत्ति फ्रच भाषा से हुई है। जिसका अर्थ है 'घेरना' पर्यावरण भी दो शब्दों से मिलकर बना है। परि तथा आवरण। परि का अर्थ है बाहरी आवरण का अर्थ है घेरा । इस तरह पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर घेरने वाला।

अतः पर्यावरण का निर्माण जल, वायु, भूमि उनके पारस्परिक सम्बन्ध अन्य वस्तुओं जैसे जीवों सम्पत्ति एवं मनुष्य के आपसी सम्बन्धों को मिलकर हुआ है।

भारतीय संस्कृति की ग्रहणशीलता तथा समन्यवय की प्रवृत्ति आज भी समूचे विश्व के लिये एक उदाहरण है। प्राचीन काल में आर्य वृक्षों व नदियों को पूजते थे। प्रकृति ने जिस प्रकार मनुष्य की संरचना की है ठीक उसी प्रकार उसनें अन्य जीव जन्तुओं व वनस्पतियों की रचना की है। प्रकृति की दृष्टि में उसके द्वारा बनाये गये सभी जीव समान है। वनों और उपवनों का पेड़ पौधों व अन्य वनस्पतियों का महत्व केवल इतना ही नहीं कि वे देखनें में सुन्दर लगते है। ये हमारे मित्र है, सहोदर है, हमारे प्राण है। वास्तव में वृक्षों का अर्थ है– वर्षा, उर्वरक भूमि, भूमिक्षरण पर रोक हमारा भोजन, हमारा आच्छादन, हमारा सौन्दर्य और हमारा माधुर्य। वृक्ष जब पृथ्वी को अपने से ढक लेते है तो वे पर्यावरण के सजग प्रहरी के रूप में प्रदषण को दूर भगा देते है। पर्यावरण तथा मानव के दैनिक जीवन के पारस्परिक सम्बन्ध बेहद गहरे होते है। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की प्राचीन सम्बन्ध में इसका उल्लेख बड़ी काव्यात्मक रीति से होता आया है।

अग्नि पुराण में वृक्ष लगाने वाले को पितरों का उद्वारक माना गया है। मनुस्मृति में वृक्ष काटने वाले को पापी की संज्ञा दी गई है। मत्स्यपुराण मं वृक्ष काटने वाले को दण्ड का स्पष्ट विधान है। इस्लाम में प्रकृति को संजाने संवारने का काम प्रत्येक मुस्लिम का धर्म है व कर्तव्य है। जैन धर्म में भी 'जीओं और जीने दो' को ध्येय वाक्य बताया गया है। हिन्दू धर्म में पर्यावरण संरक्षण को पर्याप्त महत्व दिया गया है। हिन्दू धर्म मं गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों को सदैव से ही पूज्यनीय माना गया है। विभिन्न हिन्दू धर्म ग्रन्थों में सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, इन्द्र आदि की पूजा अर्चना का नियम बताया गया है। पीपल, तुलसी और वट वृक्ष को देवतुल्य माना गया है। हिन्दू धर्म की मान्यता रही है कि कल्पवृक्ष की आराधना करने से सभी मनोरथ सिद्ध हो सकते है। सभी मनोकामनाऐं पूरी की जा सकती है। ईसाई धर्म में भी पर्यावरण सरंक्षण और अहिंसा को महत्व दिया गया है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि विश्व के सभी प्रमुख धर्मों में पर्यावरण संरक्षण हेतु उचित प्रावधान किये गये है प्राचीन भारतीय धार्मिक क्रिया–कलाप, पर्यावरण संरक्षण के इर्द–गिर्द ही केन्द्रित रहते थे। हिन्दू धर्म में यज्ञ तथा आहूति को पावनतम कर्म कहा गया है। यदि हम यज्ञ से निकले धुएँ का रासायनिक परीक्षण करें तो पायेंगे की उसमें वायु को शुद्ध करने की क्षमता होती है। इसके अतिरिक्त यज्ञ के धुऐं में क्षय, हैजा, चेचक आदि रोगों के जीवाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत क्षमता पाई जाती है। आयुर्वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि घी और चावल में केसर मिलाकर जलाने से रोगाणु मर जाते है। मुनक्का तथा किशमिश के धुएँ से टाईफाइड के रोगाणु नष्ट हो जाते है अतएवं स्पष्ट है कि हमारे धर्म ग्रन्थों में वर्णित यज्ञ क्रिया से पर्यावरण स्वच्छ, शुद्ध व निर्मल बनती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों, संस्कृति, सभ्यता व दर्शन में भी पर्यावरण संरक्षण को पर्याप्त महत्व दिया गया था। उस समय के ऋषि मुनि प्रदूषण के खतरे को जानते थे इसलिये उस समय के सभी धार्मिक तथा सामाजिक कर्मकाण्डों में पर्यावरण को दूषित होने से बचाने वाले क्रियाकलाप भी सम्मिलित रहते थे। आधुनिक युग की भागदौड़ वाली जिंदगी में व्यक्ति अपनी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता से निरन्तर दूर होता जा रहा है, उसे भूलता जा रहा है इसी कारण व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान नहीं दे पा रहा है। अतः धरती तथा जीवधारियों को बचान के लिये पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है। वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं एव संकटों के समाधान में भारतीय संस्कृति व धर्म की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को दखते हुये उनकी क्रियात्मकता पर विशेष बल दिया जाना चाहिये तथा इनके प्रचार प्रसार को विशष प्रोत्साहन देना चाहिये।

वृहदराण्कोपनिषद की एक सूक्ति हमें शिक्षा देती है अगर हमारी कामना एक स्वच्छ स्वस्थ समृद्ध एंव सुन्दर पर्यावरण की है तो हम तदानुसार ही काम करेंगे और उसका फल भी हमें वैसा ही मिलेगा, अतः हम सभी एक स्वच्छ समृद्ध एवं सुन्दर पर्यावरण की कामना करें।

References

1. Gupta, M. – 2010, Environment Protiction in Kavyas of Kalidas' Uttar Pradesh.
2. Geographical. Journal Vol. 15 – P. 142
3. Singh, N. 2002, Paryavaran Pradushan Aur Plastic, Radha Publications, New Delhi – P. 152 – 155.
4. Jatav B.L. 2004, Paryavaran and shiksha, Radha Publications, New Delhi P- 196, 294
5. Negi, P.S., 2006 – 07, Ecology and Environment, Geography, Rastogi Publication Meerut – P. 354
6. Kislay, A. and Pandey, A.–2006, Environmental Education, Discovery Publishing, House, New Delhi – P. 01